

विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -षष्ठ

दिनांक -

07-09-2020

विषय -हिन्दी

विषय शिक्षक -

पंकज कुमार

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -6 हम पंछी उन्मुक्त गगन के नामक कविता के बारे में अध्ययन करेंगे।

जीवन परिचय

डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले में 5 अगस्त सन् 1915 को हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा भी वहीं हुई। ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज से बी.ए. और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम.ए. , डी.लिट् की उपाधियाँ प्राप्त कर ग्वालियर, इन्दौर और उज्जैन में उन्होंने अध्यापन कार्य किया।

गीत काव्य : उद्गम और विकास

नाटक : प्रकृति पुरुष कालिदास

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएंगे
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएंगे ।
हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएंगे भूखे-प्यासे
कहीं भली है कटुक निबोरी
कनक-कटोरी की मैदा से ।

स्वर्ण-श्रृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले ।
ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नील गगन की सीमा पाने
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने ।
होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी ।

शब्दार्थ

पंछी - पक्षी

पिंजरबद्ध - पिंजरे में बंद

पुलकित - पसन्न

निबोरी - नीम का फल

स्वर्ण - सोना

लिखकर याद करें।